Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

LEV

लैव्यव्यवस्था 1:1–7:38, लैव्यव्यवस्था 8:1–10:20, लैव्यव्यवस्था 11:1–15:33, लैव्यव्यवस्था 16:1–34, लैव्यव्यवस्था 17:1–22:33, लैव्यव्यवस्था 23:1–24:9, लैव्यव्यवस्था 24:10–23, लैव्यव्यवस्था 25:1–55, लैव्यव्यवस्था 26:1–46, लैव्यव्यवस्था 27:1–34

लैव्यव्यवस्था 1:1–7:38

लैव्यव्यवस्था का पहला भाग बलिदानों का वर्णन करता है जो याजकों द्वारा पवित्र तंबू में किए जाते थे।

इनमें होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, पापबलि और दोषबलि शामिल थे।

इस्राएलियों ने विभिन्न कारणों से भेंटें और बलिदान किए। कुछ भेंटें केवल इसलिए दी गईं क्योंकि लोग उन्हें देना चाहते थे। अन्य परमेश्वर द्वारा अनिवार्य थीं। और कुछ तब दी गई जब एक याजक परमेश्वर की सेवा शुरू करने की तैयारी कर रहा था।

भेंट और बलिदान उन वस्तुओं से किए जाते थे जो लोगों के पास थीं। वे पशुओं का बलिदान कर सकते थे जो बहुत महंगे होते थे जैसे कि बैल। वे छोटे पशुओं या यहाँ तक कि पक्षियों का बलिदान भी कर सकते थे जो कि इतने महंगे नहीं होते थे। वे रोटी या आटे का भी बलिदान कर सकते थे।

समुदाय में हर कोई बलिदान और भेंटों के माध्यम से परमेश्वर की आराधना कर सकता था। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वे कितने अमीर या गरीब थे। इस बात का भी महत्त्व नहीं था कि वे महत्वपूर्ण अगुवे, याजक या सामान्य लोग थे। लोगों की ज़िम्मेदारी थी कि वे अपने बलिदानों और भेंटों को पवित्र तंबू में लाएं। याजकों की ज़िम्मेदारी थी कि वे बलिदान करें और जो बच जाए उसकी देखभाल करें।

बलिदान एक तरीका था जिससे लोग यह दिखाते थे कि वे आज्ञा मानते, विश्वास करते और परमेश्वर से प्रेम करते थे। इस कारण, बलिदानों की सुगंध परमेश्वर को प्रसन्न करती थी। यह सुगंध परमेश्वर के लोगों को यह भी याद दिलाती थी कि परमेश्वर ने उनके जीवन में अच्छी चीजें प्रदान की हैं।

लैव्यव्यवस्था 8:1–10:20

हारून और उसके पुत्र नादाब और अबीहू, एलीआज़र और इतामार को याजक के रूप में अलग किया गया।

परमेश्वर ने इस बारे में स्पष्ट निर्देश दिए थे कि इसे कैसे करना है, जो निर्गमन अध्याय 28 और 29 में हैं। इस समारोह में विशेष जल से धोना और याजकों के वस्त्र पहनना शामिल था। इसमें तेल से अभिषेक किया जाना और बलिदानों के लहू से छिड़काव किया जाना भी शामिल था।

सात दिनों के बाद, हारून और उसके पुत्रों ने अपने कार्य को याजक के रूप में शुरू किया। परमेश्वर बहुत प्रसन्न हुआ कि उन्होंने उसकी पूरी तरह से आज्ञा मानी। परमेश्वर ने अपनी महिमा पूरे समुदाय को दिखाई और वेदी पर आग भेजी। इससे लोगों में आनंद भर गया।

याजकों का मुख्य कार्य बलिदान चढ़ाना और लोगों को शिक्षा देना था। उन्हें यह बताना था कि क्या पवित्र है और क्या सामान्य है। लेकिन नादाब और अबीहू ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने एक ऐसा बलिदान चढ़ाया जो परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध था। इस कारण प्रभु ने आग भेजी जिसने नादाब और अबीहू को मार डाला।

लैव्यव्यवस्था 11:1–15:33

इन अध्यायों में भोजन, बच्चों का जन्म और त्वचा रोगों के बारे में नियम थे। वे फफूंदी और लोगों के शरीर से निकलने वाले तरल अपशिष्ट के बारे में भी थे।

लैव्यव्यवस्था में इन नियमों के दो मुख्य बिंदु थे। पहला यह था कि इस्राएलियों को अन्य जातियों से अलग होना था। जिन खाद्य पदार्थों को वे खा सकते थे और जिन्हें वे नहीं खा सकते थे, इससे यह दिखाता था। अलग होना यह दर्शाता था कि इस्राएली अन्य जातियों के झूठे देवताओं का अनुसरण नहीं करते थे। वे सच्चे परमेश्वर का अनुसरण करते थे जो कि पवित्र था।

दूसरा मुख्य बिंदु यह था कि परमेश्वर जीवन का परमेश्वर है। मृत्यु पाप का परिणाम है। परमेश्वर नहीं चाहता है कि उसकी बनाई हुई दुनिया में पाप और मृत्यु हों। इसलिए जिन चीज़ों का मृत्यु से सम्बन्ध था वे लोगों को अशुद्ध बना देती थीं। परमेश्वर के लोगों को उनसे नियम प्राप्त हुए कि कैसे स्वयं को शुद्ध और पवित्र रखना है। शुद्ध और पवित्र होने से उन्हें

समुदाय के साथ परमेश्वर की आराधना करने की अनुमति मिलती थी।

लैव्यव्यवस्था 16:1–34

परमेश्वर ने पापबलि और दोषबलि प्रदान किए ताकि पाप का निवारण हो सके। इन बलियों ने इस्राएलियों को यह समझने में मदद की कि उनके पाप क्षमा हो गए थे।

लेकिन जिन स्थानों पर इस्राएली रहते थे, वे उनके पापों के कारण अशुद्ध हो गए थे। यह पूरे शिविर के लिए सच था। यह पवित्र तंबू और अति पवित्र स्थान के लिए भी सच था। यदि वे स्थान अशुद्ध और अपवित्र बने रहते, तो परमेश्वर वहां उपस्थित नहीं हो सकते थे।

तो परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए शुद्ध और पवित्र बनाए जाने का एक मार्ग प्रदान किया। यह वर्ष में एक बार प्रायश्चित दिवस पर होता था। यह वह दिन था जब पापों का प्रायश्चित किया जाता था। जब कोई अपने पाप का भुगतान करता है, तो इसका मतलब है कि वे अपने पाप का प्रायश्चित करते हैं।

प्रायश्चित के दिन में जीवित बकरों का समावेश होता था। एक बकरे की बलि दी जाती थी। महायाजक इस्राएलियों के पापों को परमेश्वर के सामने जोर से कहते थे। वह इस बारे में तब बात कहते थे जब उनके हाथ दूसरे बकरे के सिर पर होते थे। यह लोगों के पापों को बकरे पर डालने का संकेत था। फिर बकरे को रेगिस्तान में छोड़ दिया जाता था। यह पापों को लोगों से दूर ले जाने का संकेत था।

कई वर्षों बाद, यीशु ने सभी पापों को अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने अपने आपको पाप बलिदान के रूप में अर्पित किया। इस प्रकार से वह मेमने के समान थे। उन्होंने लोगों पर पाप की शक्ति को हटा दिया। जो उन पर विश्वास करते हैं उन सभी को सदा के लिए शुद्ध और पवित्र बनाया गया है। यीशु में विश्वास करने वालों के पापों के लिए और कोई बलिदान आवश्यक नहीं है।

लैव्यव्यवस्था 17:1–22:33

परमेश्वर ने इस्राएल को अन्य राष्ट्रों से अलग करके अपनी प्रजा बनाया। उन्हें अपने आस-पास के लोगों की प्रथाओं का पालन नहीं करना था। उन्हें उन प्रथाओं का पालन करना था जो परमेश्वर ने उन्हें दी थीं। ये प्रथाएँ परमेश्वर की प्रजा को अलग और पवित्र बनाने में मदद करेंगी जैसे परमेश्वर है।

कई चीज़ों के बारे में नियम थे। उन सभी का आधार यह था कि परमेश्वर कितने पवित्र हैं। पशुओं और उनके लहू के बारे में नियम थे। यौन संबंध और पशु बलि चढ़ाने के बारे में नियम थे। याजकों और महायाजक को कैसे व्यवहार करना चाहिए इसके लिए भी नियम थे। अन्य इस्राएलियों और बाहरी लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसके बारे में भी नियम थे।

दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसके बारे में सबसे महत्वपूर्ण नियम लैव्यव्यवस्था 19:18 में है। इस्राएलियों को अपने पड़ोसियों से उसी तरह प्रेम करना था जैसे वे स्वयं से करते थे। यह नियम हर परिस्थिति में उनका मार्गदर्शन करने के लिए था।

लैव्यव्यवस्था 23:1–24:9

परमेश्वर चाहते थे कि उनके लोग याद रखें कि सभी अच्छी वस्तुएं उनसे आती हैं। परमेश्वर ने उन्हें इसे याद रखने के कई तरीके दिए।

सोने की मेज पर कभी न बुझने वाले दीपक और पवित्र रोटी उन्हें याद दिलाते थे। पवित्र तंबू में जलती हुई धूप की सुगंध भी उन्हें याद दिलाती थी।

इस्राएलियों ने जो पर्व मनाए, वे भी उन्हें याद दिलाते थे। विश्राम दिन उन्हें याद दिलाता था कि परमेश्वर ने उन्हें आवश्यक विश्राम प्रदान किया।

फसह और अखमीरी रोटी का पर्व उन्हें उस समय की याद दिलाते थे जब परमेश्वर ने उन्हें बचाया था। उन्होंने उन्हें तब बचाया था जब वे मिस्र में दास थे।

फसलों का पहला हिस्सा अर्पित करना उन्हें याद दिलाता कि जब उन्होंने कनान में प्रवेश किया तब परमेश्वर ने उनको भोजन प्रदान किया था। सप्ताहों का पर्व भी उन्हें यह याद दिलाता था। बाद में सप्ताहों के पर्व को पिन्तेकुस्त कहा गया।

नरसिंगों का पर्व इस्राएलियों को विश्राम करने और पाप से दूर होने के लिए आमंत्रित करता था। जिस दिन पाप का प्रायश्चित किया गया उसे प्रायश्चित का दिन भी कहा जाता था। यह उन्हें याद दिलाता था कि परमेश्वर ने उनके पापों को क्षमा किया।

झोपड़ियों का पर्व उन्हें याद दिलाता कि जब वे मिस्र से निकले थे तब परमेश्वर ने कैसे उनकी देखभाल की थी।

लैव्यव्यवस्था 24:10–23

इस्राएलियों को उनके द्वारा किए गए गलत कामों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना था। यह उनके समुदाय में रहने वाले सभी लोगों के लिए भी सच था। इसमें यह भी शामिल था जब उन्होंने परमेश्वर के नाम के विरुद्ध बुरी बातें बोलकर पाप किया। इसमें दूसरों को पहुंचाई गई हानि भी शामिल थी।

उन्हें उस चोट के अनुसार दंडित किया जाना था जो उन्होंने अन्य लोगों को पहुंचाई थी। यह उत्पत्ति 4:23–24 में लेमेक

के हिंसक उदाहरण से अलग था। लेमेक ने उन लोगों को मार डाला जिन्होंने उसे चोट पहुंचाई थी। उसने लोगों को 77 गुना अधिक चोट पहुंचाने का दावा किया जितना कि उसे पहुंचाई गई थी के बारे में घमंड किया।

बाद में, यीशु ने अपने अनुयायियों को उन लोगों को माफ करने के बारे में सिखाया जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाई।

लैव्यव्यवस्था 25:1–55

इस्राएलियों के चारों ओर के लोग विश्राम के दिन का सम्मान नहीं करते थे। न ही वे विश्राम वर्ष या जुबली वर्ष का अभ्यास करते थे। ये प्रथाएँ इस्राएलियों को अलग करती थीं। उन्होंने दिखाया कि सब कुछ परमेश्वर का है। लोगों द्वारा किया गया काम उनका था। इसी तरह वे सप्ताह और वर्ष भी उनके थे जिनमें वे रहते थे। जिस भूमि पर परमेश्वर ने उन्हें रहने की अनुमति दी थी, वह भी उनकी थी।

सब्त का वर्ष हर सातवें वर्ष होता था जब इस्राएली खेती करना बंद कर देते थे। इससे भूमि को विश्राम मिलता था जैसे लोग सब्त के दिन विश्राम करते थे। यह परमेश्वर द्वारा दी गई भूमि के प्रति विश्वासयोग्य शासकों के लिए एक तरीका था। इससे यह भी दिखता था कि इस्राएली परमेश्वर पर भरोसा करते थे कि वे उनके लिए भोजन प्रदान करेंगे।

जुबली का वर्ष हर पचास साल में होता था। यह एक और वर्ष था जब भूमि की खेती नहीं की जाती थी बल्कि उसे विश्राम दिया जाता था। इसने लोगों द्वारा भूमि के स्वामित्व में किए गए किसी भी परिवर्तन को रोक दिया। भूमि को उन गोत्रों और परिवारों को वापस कर दिया गया जिन्हें परमेश्वर ने पहले दिया था। इस्राएलियों को उन पैसों के कर्ज से मुक्त कर दिया गया जो उन्होंने दूसरों को देने थे। जुबली का वर्ष किसी भी इस्राएली को अन्य इस्राएलियों के लिए सेवक के रूप में काम करने से भी रोकता था। इससे इस्राएलियों को याद दिलाया गया कि वे केवल परमेश्वर के सेवक थे। क्योंकि वे परमेश्वर के थे, उन्हें दास के रूप में खरीदा और बेचा नहीं जाना था।

लैव्यव्यवस्था 26:1–46

वाचा की आशीषों और वाचा के शापों की यह सूची व्यवस्थाविवरण अध्याय 28 से 30 में पाई जाने वाली सूची के समान है। इसमें वर्णन किया गया था कि यदि लोग सीनै पर्वत वाचा के प्रति विश्वासयोग्य होंगे तो क्या होगा। इसमें यह भी वर्णन किया गया था कि यदि वे विश्वासयोग्य नहीं होंगे तो क्या होगा।

वाचा के प्रति वफादार रहने से अद्‌भुत आशीषें मिलेंगी। इस्राएलियों के लिए जीवन कई मायनों में अदन की वाटिका में जीवन जैसा होगा। इस्राएलियों के पास उस भूमि में सब कुछ होगा जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। जब वे खेती करेंगे तो भूमि फसलें उत्पन्न करेगी। उनके पास खाने के लिए बहुत कुछ होगा और उनके कई बच्चे होंगे। उनके पास शांति होगी और वे सुरक्षित रहेंगे। परमेश्वर की उपस्थिति उनके साथ होगी।

वाचा के प्रति विश्वासयोग्य न होने से भयानक शाप आएंगे। भूमि उनके लिए फसलें उत्पन्न नहीं करेगी। वे शत्रुओं और पशुओं द्वारा आक्रमण किए जाएंगे। उन्हें कई बीमारियाँ होंगी और उनके बच्चे मारे जाएंगे। वे उस भूमि को खो देंगे जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। परमेश्वर स्वयं उनके शत्रु बन जाएंगे। ये बातें तब होंगी जब इस्राएली सब्त के वर्षों के दौरान भूमि को विश्राम नहीं देंगे। ये तब होंगी जब लोग केवल परमेश्वर की आराधना नहीं करेंगे। ये इसलिए होंगी ताकि लोग समझ सकें कि उन्होंने पाप किया है।

लेकिन परमेश्वर हमेशा अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे, भले ही लोगों ने पाप किया। वे अपने पाप से मुंह मोड़ सकते थे और पश्चाताप कर सकते थे। फिर परमेश्वर उन्हें क्षमा कर देते और एक बार फिर उन्हें वाचा की आशीष देते।

लैव्यव्यवस्था 27:1–34

परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलते या अपने वादों को नहीं तोड़ते। इस्राएलियों को इस मामले में उनके जैसा होना था। यदि इस्राएलियों ने कोई वादा किया, तो उन्हें उसे निभाना था।

इस्राएलियों के लिए यह सामान्य था कि वे परमेश्वर को कुछ देने का वादा करते थे जो उन्हें प्रिय था। यह किसी अन्य व्यक्ति, एक पशु, उनका घर या उनकी भूमि का एक हिस्सा हो सकता था। परमेश्वर इन उपहारों को पवित्र मानते थे।

कभी-कभी लोग उस चीज़ के बारे में अपना मन बदल लेते थे जो उन्होंने परमेश्वर को दी थी। जब ऐसा होता था तो जो उन्होंने दिया था उसे वापस खरीदना पड़ता था। इससे यह दिखता था कि वे अभी भी परमेश्वर का सम्मान कर रहे थे और अपना वादा निभा रहे थे।

कुछ चीजें जो इस्राएलियों के पास थीं, उन्हें अपने लिए उपयोग नहीं करना था। यह बात पशुओं के पहले जन्मे नर के बारे में सही थी। यह सभी फसलों और फलों के दसवें हिस्से के बारे में भी सही थी। यह पशुओं के हर दसवें पशु के बारे में भी सही थी। इन चीजों का उपयोग केवल परमेश्वर की सेवा के लिए किया जाना था। इसका यही अर्थ था कि वे प्रभु के थे।

लोगों ने इन सभी चीजों को याजकों के पास ले जाकर परमेश्वर को अर्पित किया। इस प्रकार, परमेश्वर ने लेवियों के लिए प्रावधान किया।